242
828
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1244/10121

Call No.

Acc. No. 828

IMPERIAL ... DEPARTMENT
RECEIVED,
30 MAR 1931

श्री मान तिलक

स्वतन्त्र भारत क्रान्ती

LALA
AJPATRA.

प्रकाशकः—

मिट्ठनलाल अग्रवाल

कांग्रेस कमेटी पुरवा

891.481
Sui // S

बृटिशराज्य कालकी कहानी

ओ ३ म्

स्वतन्त्र आल्हा

प्रकाशकः—

बाबू मिट्ठन लाल अग्रवाल,

कांग्रेस कमेटी प्रांत पुरवा उन्नाव

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 828
Date 22-12-71
GOVT. OF INDIA

* ओ३म् *

स्वतन्त्र आल्हा

ओ३म्कार की बिनती करता जो है सकल सृष्टि आधार।
सुर मुनि जाको ध्यान लगावें महिमा जाकी अपरम्पार॥
निराकार जगदीश अजन्मा महादेव श्रृष्टी करतार।
कर्मों का फल देने वाला जीव प्रकृति का है सरदार॥
अब कहूँ हकीक़त आर्य्यवर्त की सुनलो भरत खन्ड के भाय।
जो इतिहास हमारे कहते उसको हम दें गाय सुनाय॥
जगत गुरू याँके थे ब्राह्मण क्षत्री चक्रवर्ति कहलाय।
पारस मणि थी भूमि देश की कथन करे सब देय बताय॥
महभारत से चक्रवर्ति गई प्रथवी राज से राज्य विलाय।
ऊंचे थे सो नीचे होगये काल चक्र सों कहा बसाय॥
नाना दुःख देश ने पायो अधरम फैल रहा संसार।
यवन काल में धर्म नशाये उसके कथन में है लाचार॥
कोटिन भाई मुस्लिम होगये जो भारत में रहे दिखाय।
आघात धर्म पर बहुत होगये आ इतिहास ने दिया बताय॥
पर बहुतक राजा यवन राज्य में न्यायी दयावान कहलाय।
यवन यहाँके खुद बासी थे दौलत यहां की यहाँ दिखाय॥

परजा की वह रक्षा करते राज्य धर्म के जानन हार ।
धन से भरा पुरा भारत था हिन्दुन मन्त्री तक अधिकार ॥
सस्त्र छीन औरत नहीं कीन्हा ना अन्याय के नियम चलाय ।
परजा का धन परजा हित था नाहीं दुकन्दारी दिखलाय ॥
नाहीं इतनी मालगुजारी नाहीं टिक्सों की भरमार ।
नाहीं बस्तु बिदेशी आवे नाहीं धन बिदेश को जाय ॥
तिलहन अन्न रुई लोहा भी नाहीं बाहर को थे जाय ।
सुबरनमय अरु अन्नपूर्णा ऐसी भारत भूमि कहाय ॥
बनकर कपड़ा और बस्तुऐं यां से देशान्तर को जांय ।
जिसके लाभ में भारत बासी अर्बों रुपया वहांसे लांय ॥
परअरकी यांकुछ और होनथा यहांपर हुआ अशान्ति का जोर।
सिक्ख मरहट्ठा और मुस्लिम में होने लगे युद्धि घनघोर ॥
जिसका फल यह हुआ देश में कूदि फिरंगी पहुंचे आय ।
आइन २ द्वेष बढ़ाकर अपनी सत्ता लिहिनि बढ़ाय ॥
अस्त्र शस्त्र वह छीन लेगये हमको औरत दिहियो बनाय ॥
कला कौशल को नष्ट करदिया अपनी लीला दियोफैलाय ।
कर किये जारी कर्घे तोड़े अपना बनिज दियो फैलाय ॥
नाना बिधि से दौलत लूटी अत्याचार दियो फैलाय ।

ब्रिटिश राज्य काल

धनि २ रानी विक्टोरिया को अपनी आज्ञा कियो प्रचार।
भारत बासी पुत्र हमारे करिहैं यकसां हम ब्योहार॥
लोभ उठाना नहिं इच्छा है गड़बड़ हम सब दिहैं मिटाय।
शान्ति भये फिर राज्यको देंगे तब तक चली रहेंगे भाय॥
दियो दिलासा आंसू पोंछियो दिल में ढाढ़स दियो बंधाय।
पुत्र चिरंजीव पोते उनके उनके बचन दियो दुहराय॥
देश शान्ती भारत होगई मिट गयो देश से अत्याचार।
गाँव २ में खुले मदरसे कीन्हियो विद्या का प्रचार॥
औषधालय पोस्ट आदि से परजा बहुत खुशी होजाय।
लड़के बनिगईं भरत खन्ड में आंखे मून्दि चला सब जाय॥
रेल तार न्यालय हुए जारी अब तो युग ही नया दिखाय।
कांगरेस आदि सभा हुईं जारी परजा के जो कष्ट सुनाय॥
पर खींच बिदेशी धन को लेगये तरह २ की युक्ति चलाय।
कला कौशल सब नष्ट कराये सबको मुफ़लिस दियो बनाय॥
हीरा मोती सोना चांदी पहुंचेब सात समुन्दर पार
खाने को भी अन्न न रहता भारत हा हा कार पुकार॥
राज्य काज में अनहित अपना इससे हम करते फिर्याद।
पुत्र पिता से हरदम मांगे नहीं यह राज द्रोह बकवाद॥
होन हार हम पुत्र पिता के करि हैं अपना हम सब कार।

अब नहीं चली हमारे रहियें हम पर हुकुम चलाने हार ॥
पिता का नौकर कोई होवे पुत्र का नौकर भी कहलाय ।
प्रजा के नौकर नौकरशाही कहता न्याय हमे बतलाय ॥
नौकरशाही के हम स्वामी हम पर करते अत्याचार ।
यह अन्याय न सहते बनता उनके बनन बिगाड़न हार ॥
क्यों हम थोड़ा वेतन पावें पावें विदेशी बे सुरमार ।
हम थोड़े अधिकारी क्यों हैं भारत भूमी मातु हमार ॥
अस्त्र शस्त्र हम क्यों नहीं पावें जबलब दुनियां रही संभार ।
जान माल की रक्षा कारण वेदों ने दीन्हा अख्तियार ।
ऊंचे पद क्यों हम नहीं पावें महारानी ओ कहियो पुकार ॥
भारत का धन भारत को है चाहिए प्रबन्ध भारतियन क्यार ।
भारत सम इन्गलैन्ड देश है फिर क्यों इकसाँ नहि व्योहार ।
हम मूरख विद्वान वहां के ऐसा विद्या का परचार ।
ऊंची विद्या और परीक्षा क्यों नहीं होती भारत भाय ॥
इसका कारण नहीं बतलावें यह तो कूट नीति दिखलाय ।
यहाँ पर सौ में पुरुष पढ़े छः औरत एक पढ़ी कहलाय ॥
और देश सब पढ़ें पढ़ावैं मुफ्त जबरिया नियम चलाय ।
नौ पाई हर मनुष्यकी आमद पैत्रिक धन सबदिया गंवाय ॥
ज़ेवर भूषण की नाहीं भई भारत हाय हाय चिल्लाय ।
घी और दूध की नाहीं होनई बल बीरज जो देय बढ़ाय ॥
नाना रोग देश रहे छाये आयू घटी भारतीयन भाय ॥

पशु धन नष्ट होत हैं निश दिन ओ बल कृषी बढ़ावन हार।
नाहक उन पर चले कटारी बूचड़ खाना वे शुम्मार ॥
सौ में पचासी कृषक देश में उनका हाल देउं बतलाय।
सह कुटुम्ब यह परिश्रम करते रोटी पेट भरी नहीं पाय ॥
फडुआ बैल के संग में लड़ते जाड़ा गर्मी और बसात।
एक वस्त्र से हरिऋतु झेलें जाड़ा तापि गुजारे रात ॥
माल गुजारी टेक्स बढ़न से जमीदार दियो पोत बढ़ाय।
पोत बढ़न से सबकुछ महगा परजा हाय २ चिल्लाय ॥
बनिज और व्यापार लिया सब हमको कुली बनायो आय।
कुत्ते से कम कदर कर रहे यह है कर्मों का फल भाय ॥
देश उजारन के कारन से अंगरेजन दियो रेल चलाय।
नक़ली चीजें घर २ तोपियो उम्दा वस्तु विलायत जाय ॥
गल्ला तिलहन और वस्तुऐं यांसे देशान्तर भिजवाय।
दैवी गति और नहर कमी से छूरा बार २ दिखलाय ॥
सभ्य देश के यहाँ मुकाबिल चौगुन रेलों का बिस्तार।
जल और थल के मार्ग उजड़ गये रेल जहाजन के परचार ॥
दूना पानी देश में बरसे जितना खेती को दरकार।
पानी रोकन के कुबन्ध से भूरा खड़ा रहे तय्यार ॥
यहां फिरंगी कूटनीति से गाड़ी नाव को बन्द कराय।
भारत का लेलियां बनिज सब भारत की प्रभुता को पाय ॥
नौकर शाही जुल्म देखकर परजा बहुत रही घबड़ाय।

बंग भंग ने आनि जगायो नश्तर करजन दियो लगाय ॥
भारत देश सचेता होगया घर २ हुआ स्वदेशी राग ।
राज्यद्रोही बनी युवक मन्डली घर २ बम्ब बनन फिर लाग ।
वही समस्या वही औसर पर दादा भाई पहुंचे आय ।
प्राण बचाये नौ युवकों के दीन्ही युक्ती नेक बताय ॥
होमरूल सब मिलकर मांगो तुम्हरे कष्ट दूरि होजांय ।
मनो कामना पूरी होई है बिगड़े कार्य सिद्ध होजांय ॥
अनहित देख बिदेशी अपना हमको दियो कोर्ट पहुंचाय ।
पर धन्य न्याय की है परशंशा पाला रहयो स्वदेशिन जाय ॥
एक युक्ति यह नई निकाली उसको भी सुनिये चित लाय ।
सबका उत्तर उन्होने पाया नये २ करने लगे उपाय ॥
बाबू सभा कांग्रेस बोले हिन्दू मुस्लिम में नहीं मेल ।
या ते नहिं स्वराज्य अधिकारी ऐसा बोलन लागे बोल ॥
हिन्दू मुस्लिम दोनों मिलगये काँगरेस लाखों पहुंचे जाय ।
शत्रुन दल में गड़बड़ मच गई अब क्या करिये और उपाय ॥
गून्ज स्वराज्य की भारत फैली घर २ चरचा होने लाग ।
बज्र पात सम गिरयो शत्रु पर उनके दिल में लागी आग ॥
देश शत्रु खुदगर्ज स्वदेशी अपने दल में लिये मिलाय ।
जो यह दस्तखत करके भेजैं हमको नहिं स्वराज्य की चाय ॥

उन पर बल हम राजी होंगे दिल में डैम फूल फर्माय ।
कारज हमरा सभी सिद्धि हो बिगड़ी बात सभी बन जाय ॥
पर बाढ़ तेज दरया की कबलौं तिनका रोक सकेगा यार ।
शत्रु सघन भी दल बल लेकर बहि गये स्रोत समुन्दर पार ॥
नौकर शाही ने फिर मिलकर एक नई चाल निकाली आय ।
इसको भी अब आगे समझो जा इन युक्ती दियो फैलाय ॥
होमरूल इस समय न मांगो यह है समय लड़ाई क्यार ।
अब नहीं मांगो तुम स्वराज्य को पीछे मगना मेरे यार ॥
चाल में आगये कुछ तो अगुआ हां में हां जो मिलावन लाग ।
पर बुद्धिमान यह चाल पुकारे भारत सोवत समझ तू जाग ॥
यहां की बातें यहि ने रहगईं अब आयर्लैन्ड का सुनो हवाल ।
आयरिश परजा ने जो कीन्हियो उसका भी सुनओ अहवाल ॥
वही समय था वही औसर पर आयरिश परजा शोर मचाय ।
हमको जल्द स्वराज्य हि देदो वरना खैर नहीं है भाय ॥
यहां दिलासा वहां निपटारा यह कथा बात नई दिखलाय ।
होश सम्भाली चाल बिचारी अब रहा और रंग लखाय ॥
मातृ भूमि को बन्धन करके अपने इष्ट मनाने लाग ।
भारत को स्वराज्य भी चहिये जब आयरिश भी मांगन लाग ॥
कमर को कसकर कार्य्य क्षेत्रमें बहुतक कूदि भये तय्यार ।
दो स्वराज्य हम योग्य हो गये यह रहे भारत घोर पुकार ॥
होम रूल की शोरनाद जब वह पहुँची है इंगलिस्तान ।

मानटूगो उठ खड़े हो गये कीन्हा भारत का प्रस्थान ॥
मानटूगो शहरों में जाजा सबसे खूब मिलाये हांथ ।
भारत से इंगलेन्ड जान में लीन्हियो चैन्स फोर्ड को साथ ॥
सब ने मिलकर गुप्ती सोची महराजा से किया सलाह ।
भारत को कुछ देना चहिये जिससे सबका हो निर्वाह ॥
बादशाह ने किरपा कीन्ही हमको कुछ देदियो स्वराज्य ।
और कहा फिर आगे देंगे जब तुम अच्छा करिहो काज ॥
विकालयुद्ध यूरुप के मौका भारत कठिन चन्दा दिया कराय ।
अरबों रुपया कर्जा दीन्हियो अपना सरबस दियो लगाय ॥
लाखों ज्वान कटे भारत के जिनकी ललना रहिं बिलखाय ।
उनके जियरा को समझावे जिनके ज्वान कन्थ कटिजांय ॥
मात पिता गुरु भाई रोवें खून के आंसू रहे बहाय ।
तनमन धन सब अर्पण करदियोराजाहितदियोप्राणगाय ॥
जीति ब्रटिश की भई जगत में दुश्मन हारि मानि रहिजाय ।
पर भारत का लाभ हुआ क्या जिसको राय खुशी होजाय ॥
संसार स्वतन्त्रता सुख भोगन को ब्रटिश लड़ा युद्धमें जाय ।
क्यों स्वराज्य भारत नहिं पावे तनमन धन जोदिया लगाय ॥
उलटा रालेट एक्ट पासकर बोलती भारत बन्द कराय ।
हाहा कार देश पर छायो कैसा बदला मिल्यो यह आय ॥
रौलेट एक्ट रद्द होने को परजा बहुत रही चिल्लाय ।
डायर औ डायर ने मिलकर अमृत में दियो गोली चलाय ॥
बाल वृद्ध कोई युवा न छोड़ियो नादिर शाही दियो मचाय ।

हाय २ कर मरे स्वदेशी भारत हित दियो प्राण गंवाय ॥
रेंग चला कोड़े लगवाये जबरन करवाये प्रणाम ।
शस्त्र हीन भारत परजा का कैसा करवाया अपमान ॥
हा, न्यायदंड क्या उन्होने पोया पिन्शन घर में रहे वह पाय ।
भारत का धन फिर भी खावें चैन कि बन्शी रहे बजाय ॥
हाय बिधाता गजब गुसइयां किसकी शरण नाथ सब जाय ।
को दुख भेडन हार हमारा अबतो तुमहो में चित लाय ॥
जब २ बिपति परी भारत पर तब २ तुमही भये सहाय ।
घोर दुःख में भारत वासी उनको डूबत लियो बचाय ॥
त्राहि माम सब शरण तिहारी नाहक चली प्रजा पर वार ।
कर्मों का फल शत्रू पावें बिनती यही है बारम्बार ॥
एक दुःख यह नहि भूलाथा दूसर गिरी स्वर्ग से गाज ।
भारत माता का वह प्यारा सबके सर का था जो ताज ॥
ज्ञान प्रोत्तकरि ज्ञान प्रकाशा तन मन धन सब दियो लगाय ।
रात दिना उपदेश धर्म कर भारत वासिन दियो जगाय ॥
राज्य नीति का आदि गुरू वह भारत छोड़ चला महराज ।
ईश्वर उसको जल्दी भेजो भारत का हो रहा अकाज ॥
भारत नय्या छोड़ बीच में चल दिया प्रभू के दर्बार ।
अब किस पर आशा करें प्रभू जी तुमही पार लगावन हार ॥
घर २ शोक मातमी छायो भारत हाय २ बिल्लाय ।
स्त्री पुरुष बाल सब रोवें ऊंची छोड़ २ डिल्हकार ॥
को हमरे हित दुःख सहै है को कारागोर होय तय्यार ।

सिंह समान देशको गर्जी अपने स्वार्थ को लातनमार।
को रक्षा भारत की करि है अपने ऊपर दुःख उठाय॥
भारत का मिटगया तिलक प्रभु मोहनजी को लेव बचाय।
हम सबको बल बुद्धि ज्ञानदो लाखों तिलक करो तय्यार॥
शत्रुन से जो बदला लेवें इज्जत भारत लेंय संभार।
असहयोग का अस्त्र देगया जो अब गांधी रहे फरमाय॥
स्त्री पुरुष बड़ा अरु छोटा रंग स्वराज्य में रंग गये जाय।
असहयोग है मन्त्र जुदाई जो गांधी का था प्रस्ताव॥
काँगरेस सभा पास करदीन्हों उसने कीन्हियोहै यह न्याव।
सरकारी नौकरियां छोड़ो वापस करो खिताब जो पाय॥
मेम्बर कौन्सिल के ना हूजो कालिज मदरसा लेव बनाय।
पंचायत स्थापन कीजियो करदो कोरटों का तिरस्कार॥
सब कोई चीज विदेशी छोड़ो धारन करो स्वदेशी यार।
आनरेरी मजिस्ट्रेटी छोड़ो परस्वार्थ में निज स्वार्थ बहाय॥
भारत के नर नारी मिलके देव स्वराज्य का फाग मचाय।
अंगरेजों से करो जुदाई अपने कारज लेव बनाय॥
निज के बंक कार्य्य सब खोलो जनता का बल देव दिखाय।
दिलसे सायं प्रातः जपियो लाला ने दियो युक्ति बताय।
हिन्दू मुस्लिम का यह कलमा अगुवा सबके रहे समझाय॥
जिस स्वराज्यहित फांसी चढ़गये कहकर भारत मातप्रणाम।
जेल सिधारे बहुत यहां के जिनके अखबारों में नाम॥
देश निकाला बहुत हो गये परदेशों में धुनी रमाय।

तप कुटियां सब जेलै हो गई कोई शर्म करे ना जाय ॥
लाखों वीर मुसीबत झेलीं पर स्वार्थ में आन लगाय ।
प्राण पखेरू उड़े बहुत के अमृत वह स्वराज्य नहि पाय ॥
अभी तपस्या और मेहनत में कुछ है कमी गौर बतलाय ।
अयोग्य विदेशी तुमको कहते तरह तरह की युक्ति बताय ॥
दूसरे देसों के इतहासन भाई खूब पढ़ो चितलाय ।
इन स्वराज्य था कैसे पाया मारग वही पकड़ लो आय ॥
असहयोग था अस्त्र अपूरव जो गांधी ने बतायो आय ।
ऊधम कर दिये कुछ लोगोंने मारकाट भी लियो मिलाय ॥
चोरी चारा गड़बड़ कर दियो जो नहिं गांधी के मन भाय ।
उसी के कारन गांधीजी ने शोक किया और कहा मुझाय ॥
अधरम हमरे कार्य में हो गया अब नहिं आगे चलि है भाय ।
असहयोग हुआ बंद देश में अगुवा कौंसल पहुँचे जाय ॥
इस के ज़रिये कार्य देश का हम सब करि है मन चितलाय ।
अङ्गरेजों की फूट नीति से कार्य्य न पड़ता नेक दिखाय ॥
बड़े लाट ने अपने बल पर पर्जा के हित खाक मिलाय ।
साइमनजी ने दल बल लेकर भान मती का खेल दिखाय ॥
देश ने कह दिया लौटो साइमन तुम्हारी जाँच नहीं मन भाय ।
लाहौर शहर के इस झगड़े में सांडर्स दुष्ट ने कियो प्रहार ॥
लाला जी के चोट कलेजा अजहद पहुंच गई मेरे यार ।
पंजाब केशरी रण में जूझियो जग में मच गयो हाहाकार ॥
भारत के नर नारी कांपे ऊंची छोड़ छोड़ हुंकार ॥

पञ्जाब केशरी कहां सिधारे जो पति लाज बचावन हार ॥
लेव दुबारा जन्म देश में परमेश्वर की आज्ञा पाय ।
दैत्यों का कर देव नाश फिर देशजनों को लेव बचाय ॥
अगुआ देश के ऐसे जूझैं भारत सहे कलेजे चोट ।
धर्म न्याय हमदर्दी उड़ गई कर्म होगये ऐसे खोट ॥
साण्डर्स स्वर्ग सिधारा वह भी अपने कर्मों का फल पाय ।
डायर औ डायर सज़ा क्या पायो जो हम देवैं साथ सुनाय ॥
देश द्रोही खुद गर्ज़ स्वदेशी सायमन के ढिग पहुँचे जाय ।
दे बयान दिल में खुश होवें मानो स्वर्ग की गद्दी पाय ॥
शर्म न आवे बेशर्मों को सायमन जांच पढ़ो चित लाय ।
जैसे अगुआ पहिले कहते वैसा फल अब दिया दिखाय ॥
स्वार्थ जहां न्याय क्या होगा राउन्डटेबुल में मेरे भाय ।
आज़ादी या मौत ठान लो लो स्वराज्य या मोक्ष को पाय ॥
लाला जी के चिता की ज्वाला भारत देश फैल गई आय ।
आज़ादी की उठी आवाज़ें कांग्रेस से भी पास कराय ॥
फिर भी गांधी ने विनती कर ग्यारह शर्तें हमारी लो मान ।
तबभी हम कुछ मान लेंयगे सरकार ने कीन्ह कुछ नहि ध्यान ॥
नशा करो दो बन्द देश से नमक का कानून लेव उठाय ।
आधी कर दो मालगुज़ारी जमा खर्च हम देंय मिलाय ।
ऊंचे वेतन आधे करदो फ़ौज का खर्चा देव घटाय
भारत सिक्का करो बराबर जहाज़ बनिज में देव अख्त्यार ।
अस्त्र शस्त्र हम रखने पावें जो सब दुनिया रही सम्हार ।

राज द्रोह की सजा उठादो खुफिया पुलिस को देव हटाय ॥
वस्त्रविदेशी कर हो चौगुन देशी वस्तु का करो प्रचार।
मुकम्मिल देश धनी होजावे अहतक तुम्हरे हो अख्त्यार ॥
रिगुलेसन अट्ठारह रोको हमरे लीडर लेव बुलाय ।
कुछ परवाह न कीन्हयो ब्रटिश तब गांधीजी भे लाचार ॥
जैसे कृष्ण चन्द के समुझाये कौरव कुछ नहि दीन्हा यार ।
स्वतन्त्रता का युद्ध छिड़गया कूदि पड़े कोटिन नर नारि
दुर्गा बनकर देवी कूदीं अभिमन्यु सम बालक ललकार।
देवासुर संग्राम छिड़गया अब श्याम प्रभू पर चित्त जमाय ॥
एक ओर सत्याग्राही निहत्ते सन्मुख फौज पुलिस दिखलाय।
निहत्था के हथियार प्रभूजी तुम्हीं मददगार कहलाय ॥
गोली बरसे प्रजा के ऊपर जेल करें डंडे लगवाय ।
भारत आरत बिलख रहा है महादेव दो विजय दिखाय ॥
अन्यायी आर्डर हों जारी प्रजा न माने मन चित लाय ।
धर्म अधर्म की होय लड़ाई धर्म की जीत पड़ै दिखलाय ॥
अगुआ देश हितैशी जितने नौकरशाही दियो कैद कराय ।
अबला बालक भी दुख झेलें कितने स्वर्ग सिधारे जाय ॥
कहीं डंडे अरु कोड़े बरसें घोड़ों से भी दिया कुचलाय ।
गोली बरसे प्रजा के ऊपर हाहाकार रहा जग छाय ॥
अंगरेजों का यही न्याय है दुनिया देखे भारत आय ।
भारत वासी दुखड़ा झेलैं गोरे मौजें रहे उड़ाय ॥

यह अन्धेर कहां तक होगा दुख भंजन प्रभु करो सहाय।
अब करें वन्दना परमेश्वरको दोऊकरजोर करें परनाम॥
जो संकट में होय सहायक ध्याता सायं जपो हरिनाम।
दुष्टन को संहार करेगा सबकी लाज बचावन हार॥
दुखी जनों की हरदम सुनता उनको बिजय दिलावनहार।
अब कुछकर बाते हम बतलावें सज्जन सुनियो कानलगाय॥
ध्यान धरनसे सब कुछ जानें नहिंकुछ कहता उसे बढाय।
भारत बासी जितने यां पर है दुनियामें पाँच में एक॥
भारत चीन मिलाकर आधे बोधधर्मके हैं नेक।
दुनियां में जिस कदर देश हैं आबादी का सुनो बयान॥
लाखोंगिनती बहुत जगह की दशबारह का कोटि बखानि।
चीन पैंतालिस भारत इकतिस रूसपन्द्रह कोटि प्रमान॥
बाक़ी सात करोड़ के अन्दर सज्जन सब लें दिलमें ठानि।
ग्रेट ब्रटन अंगरेज जहां के साढ़े चार करोड़ बखानि॥
आबादी में भारत दूजा आजादी में नीच समान।
आबादी दुनियाका सज्जन कुछ वृत्तान्त सुन्यो चितलाय॥
भारतका अबहाल जानलो शंका सब का फिर मिटजाय।
सात करोड़ मुसलमाँ यांपर हिन्दू बाइस कोटि बखानि॥
साठ लाख ईसाई देशी दो लाख के भीतर अंग्रेज प्रमान।
सब मुल्कों के चैन उड़ावें भारत रोटी को मुहताज॥
बल बुद्धी से काम न लोगे कैसे बनिहैं तुम्हरे काज।
देश जाति की रक्षा कारण तनमन धन सबदेव लगाय॥

ऋषी संतान का गौरव राखो भारत इज्जत लेय बचाय ।
हिन्दू मुसलिम अरु ईसाई भारत माता सम लो जानि ।
यही प्याली हम सबको है भारत हित सब दीजो प्राण ॥
फिर सब मिलकर मौज उड़ैं हो नाती पोतो का कल्यान ।
नाहीं कायर निर उतसाही दुनिया कहिहै तुम्हें बखानि ॥
भारत में पानी नहीं बरसे भूखा किसको नहीं सताय ।
महंगी वस्तुन के होने से किसको दुखदाई नहिं आय ॥
भारत हित में सबका हित है भारत दुख में दुःख महान ।
सब मिल दुख: मिटाओ इसके जो चहो अपना कल्यान ॥
भिखमंगों को राज्य न मिलता चाहे कितना करें उपाय ।
योग्य तपस्वी को सब मिलता मन बुद्धी जो देय लगाय ॥
सुख सम्पत्ति जो करे निछावर काम पड़े जो आन लगाय ।
फिर स्वराज्य क्या चीज सामने इच्छा करे वहीं मिल जाय ॥
बकने का अब समय नहीं है कार्य्य क्षेत्र में कूदो आय ।
बिना कर्म के कार्य न होता करता बिन नहिं कार्य्य लखाय ॥
कर्त्ता के बिन कर्म किये से कार्य्य न होता बिना उपाय ।
याते कर्म करो निःस्वार्थ सब कर्तव्य समझ कर भाय ॥
अन्याय हटाना धर्म तुम्हारा गीता पढ़ो चित्त को लाय ।
जुल्म सहे अन्याय को देखे वह फिर मानुष क्यों कहलाय ॥
अधर्म रोकन के कारण हित प्राण पखेरू जांय उड़ाय ।
सच्ची मुक्ती उसको मिलती हमरा धर्म रहा समझाय ॥
आजादी है स्वर्ग बराबर बन्धन नर्क का है स्थान ।

करमों का फल ईश्वर देता यह वेदों ने किया बखान ॥
नर्क स्वर्ग आधीन तुम्हारे जैसा कर्म करोगे आय ।
वैसा फल सबको मिल जावे ईश्वर न्यायकारि कहलाय ॥
भारतके सब कष्ट मिटावो तुम्हरे कष्ट सभी मिट जांय ।
खूब धर्म की मचे देश में कारज सभी सिद्ध होजाय ॥
नशा कुकर्मों को सब छोड़ो वस्तु स्वदेशी लो अपनाय ।
भारत वासी सब मिल जावो कार्य क्षेत्र में कूदो आय ॥
अबला रणमें कूदि पड़ी है बालक भी अब रहे ललकार ।
अबलों की अबला हो कायर जिनके जीवन का धिक्कार ॥
छप्पनलाख देशमें साधू वो संकट में आवें काम ।
चौदा लाख रोजका खरचा जो गृहस्थों के पड़ता धाम ॥
विनती सबको करना चहिये सब लगि जांय देशके काम ।
अगर न मानें विनती तुम्हरी हरगिज दीजो नहीं छदाम ॥
आजादी या मौत ध्येय हो हर प्रकार कल्याण दिखाय ।
यां पर सब स्वराज्य को पावें मरने पर मुक्ती को पाय ॥
न्याय धर्म से हक हम लेंगे बली न रक्खेंगे अब भाय ।
इनके कारण सभी देश लिया प्रभुता पाय गये इतराय ॥
वेद कहें हो वैसी राजा जो परजा सब लेय बनाय ।
प्रजा कुमंडी को यह मावे राज्य नियम पर प्रजा चलाय ॥
है स्वराज्य सबदेशों कायम फिर हम क्यों ना पावें भाय ।
अंगरेज बलीपन छोड़ें हमपर संगति हमरी बैठें आय ॥
पिता समान जार्ज पञ्चम हैं भाई सम उनके युवराज ।
इनसे द्रोह कबहूँ नहिं कीज्यो मालिक सबके यह महराज ॥

न्याय धर्म से हक सब लेलो जो परजा के हैं अख्तयार।
शान्ती भंग होन नहिं पावे बिनती यही है बारम्बार॥
कर्तव्य धर्मसे च्युत नहीं होना उसपर डटे रहो सबयार।
है स्वराज्य नजदीक तुम्हारे इसको देना नहीं अब हार॥
ग्राम २ में बनें कुमेटी घर २ मेम्बर बनो सिपाह।
नरनारी बालक अरु बूढ़े सब इस कार्य्य में करो निगाह॥
बस्तु बिदेशी दिलसे छोड़ो नशा कुकर्मी देव हटाय।
घर २ चर्खे खूब चलाओ अपने कपडे लेव बनाय॥
पंचायत से झगडे मेटो अपना धन सब लेहु बचाय।
सब मिलकर के फाग मचाओ डूबत भारत लेव बचाय॥
हम स्वराज्य अब लेके रहिहैं या दे हैं सब प्राण गंवाय।
मर २ बाद २ भी जन्मे फिर भी करेंगे ऐही भाय॥
हैं थोडे अन्यायी हमपर इतनी मेंड़ न ताकत हार।
बीर पुत्र हम भारतबासी कहां तक करेंगे अत्याचार॥
अहिंसात्मक शाँतिमई है पहला हमला सुनियो भाय।
धर्म हमारा साथी जब है विजय में प्रभुजी करे सहाय॥
मन बानी अरु कदम उठाना एकसां कार्य्य में पडे दिखाय।
मन बांछित फल ईश्वर देगा वेदों ने दी युक्ति बताय॥
घोर दुःख सब उठा चुके हैं अब प्रभु देहैं दुःख नशाय।
दुखके बाद सुःख है मिलता कालचक्र का यही है न्याय॥
राजा परजा हित के कारण सच्ची बात कहा समुझाय।
खताकसूर माफ सब करना जहाँ बिगडा हो लेव बनाय॥
जोकुछ बिनय करनथा सबसेउसको कहिदियागाय सुनाय।
ओरेम शांती करो अन्तमें भारत शाँति मयी दिखलाय॥

भाइयो म० गांधी व देशके नेताओं व कांग्रेस का कहना है कि निम्न लिखित उपायों द्वारा स्वराज्य प्राप्ति करने का प्रयत्न करें।

१—भारत के प्रत्येक नरनारी बालक को चाहिये कि प्रतिदिवस ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना करे और इस युद्ध में बिजय पाने की बिनती करे।

२—ग्राम २ कांग्रेस कमेटियाँ बनाओ और प्रत्येक घर का मनुष्य कांग्रेस का मेम्बर और सत्याग्रही सिपाही बने।

३—घर घर में रहटे चरखे घिरिया तिकली चला कर अपनी जरूरत के कपड़े बनवाले और देश का ६६ करोड़ रुपया बिदेश जाने से बचावे और बिदेशी कपड़ा खरीदना और पहिनना महा पाप समझे।

४—हर प्रकार के नशा को छोड़ कर देश का करोड़ों रुपया नष्ट न करो और मनुष्यों को नशा की बुरी आदतों से छुड़ाओ।

५—प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि अपने भाइयों की मदद करे और जो २ आज्ञा कांग्रेस दे उसका पालन करना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है।

६—मुकदमाबाजी की आदत को छोड़कर कोर्टफीस तलबाना नजराना वकीलों के मेहनताना व नाहक के हक

के रुपया बरबाद न करो अपने मुकदमात अपनी पञ्चायतों द्वारा तय करलो ।

७—जहाँ तक हो सके विदेशी तथा खासकर इंगलैण्ड की चीज़ों का बाईकाट करो और स्वदेशी अपनाओ ।

८—हर मनुष्य को चाहिये कि नौकरी करना महा पाप समझे चाहे सरकार की हो या किसी दूसरेकी हो स्वतन्त्रता का पेशा करके गुलामी करना छोड़ देवे क्यों कि आजादी स्वर्ग और बन्धन नर्क के बराबर है कांग्रेस के विरोधियोंको भी हम असहयोग करके ठीक रास्ता पर ला सकते हैं ।

९—कांग्रेस के झण्डे में लालरंग हिन्दुओं व हरा रंग मुसलमानों और सफेद रंग ईसाई आदि का है इस लिये समस्त भारतीय व भारत हितैषियों का परम कर्तव्य है कि तन मन धन से कांग्रेस की मदद करें ।

१०—अहिंसात्मक शांतिमय स्वराज्य की लड़ाई में प्रण करो कि हम स्वराज्य लेकर रहेंगे और आवश्यकता पड़ने पर प्राण भी निछावर कर देंगे धर्म युद्ध में जीतने पर स्वराज्य और मरने पर स्वर्ग मिलेगा यह हमारे धार्मिक ग्रन्थों का कथन है ।

निवेदक—मिट्ठनलाल अग्रवाल

राष्ट्रीय झंडा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला,
वीरों को हरषाने वाला, मातृ-भूमि का तन मन सारा । झंडा०

स्वतंत्रताके भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश क्षण क्षणमें,
कांपे शत्रु देख कर मनमें, मिट जाये भय संकट सारा । झंडा०

इस झन्डेके नीचे निरभय, लें स्वराज्य हम अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा । झंडा०

आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ,
एकसाथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा । झंडा०

इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भलेही जावे,
विश्व विजय करके दिखलावे, तब होवे प्रणपूर्ण हमारा झंडा०

प्रेमप्रिंटिंग प्रेस कानपुर में छपा ।